Page No. 1

प्रश्न - विद्यालय की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन करें।

उत्तर - वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या में वृद्धि, विघटित परिवार तथा आवश्यकताओं की अधिकता के कारण मनुष्य का जीवन बहुत ही जटिल हो गया है। आज मनुष्य को व्यावहारिक जीवन की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तथा इन समस्याओं के समाधान के बिना मनुष्य का जीना मुश्किल हो गया है, लेकिन इन समस्याओं का सामना करना इतना सरल नहीं है। इनके लिए बहुमुखी ज्ञान एवं विज्ञान की आवश्यकता है। अतः आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विद्यालय की आवश्यकता प्रतीत होती है। वर्तमान समय में विद्यालय का महत्व बढ़ता जा रहा है। विद्यालय की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा जा सकता है कि "किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधान सभाओं, न्यायालयों एवं कारखानों में नहीं बल्कि विद्यालयों में होता है।"

(1) विद्यालय - बहुमुखी प्रतिभा के लिए उत्तम स्थान - घर व परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा गया है फिर भी जो शिक्षा बालक घर प्राप्त करता है वह बहुत ही संकुचित होती है। इस शिक्षा के द्वारा बालक वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता जो ज्ञान उसे विद्यालयों में प्राप्त होता है। विद्यालय में बालक को बहुमुखी शिक्षा प्रदान की जाती है। जिससे वह विद्यालय के हर क्षेत्र में सफल हो सके। बालक में विभिन्न जीवन विषयों का विशिष्ट एवं विस्तृत ज्ञान प्राप्त करता है, इसलिए बालक की शिक्षा के लिए घर की अपेक्षा विद्यालय अधिक महत्वपूर्ण है।

(2) विद्यालय - पारिवारिक जीवन एवं बाहरी जीवन को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है - बालक परिवार में जन्म लेता है और वहीं उसका प्रारम्भिक विकास होता है

परिवार में रहकर वह सेवा, प्रेम, सहयोग, आज्ञापालन एवं अनुशासन आदि आदर्श गुणों को सीखता है। परिवार के दायरे से निकलकर जब बालक विद्यालय जाते हैं तो उन्हें विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों के बालकों के साथ रहना पड़ता है जिसके फलस्वरूप उसका दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है तथा उसमें सामाजिकता के गुणों का विकास होने लगता है। अतः वह अपने पारिवारिक जीवन तक सीमित नहीं रहता बल्कि बाहरी जीवन की क्रियाओं में भी रुचि लेता है। (7)

(3) विद्यालय सामाजिक विरासत की सुरक्षा एवं हस्तान्तरण का प्रमुख साधन — प्रत्येक समाज की प्रगति एवं विकास वहाँ की संस्कृति पर निर्भर है। इसलिए प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहता है तथा उसे आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करना चाहता है लेकिन यह कार्य इतना सरल नहीं है जो किसी व्यक्ति विशेष या संस्था द्वारा किया जा सके। यह कार्य विद्यालय द्वारा किया जा सकता है। (8)

(4) व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास — परिवार, घर, समाज एवं चर्च आदि शिक्षा के उत्तम साधन है लेकिन न तो इनका कोई निश्चित होता है उद्देश्य और नहीं पूर्व नियोजित कार्यक्रम सभी - सभी बालक के व्यक्तित्व पर इनका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत विद्यालय का एक निश्चित उद्देश्य और पूर्व नियोजित कार्यक्रम होता है जिसका बालक के व्यक्तित्व पर व्यवस्थित रूप से प्रभाव पड़ता है तथा बालक के व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास होता है। (9)

(5) आदर्शों व विचारधाराओं का प्रसार — विश्व के आदर्शों एवं विचारधाराओं का प्रसार करने के लिए विद्यालय को अति महत्वपूर्ण साधन माना गया है इसलिए सभी स्कूलों एवं राष्ट्रों में विद्यालय का स्थान सर्वोपरि एवं गौरवपूर्ण है।

(6) शिक्षित नागरिकों का निर्माण — विद्यालय की एकमात्र वह साधन है जिसके द्वारा शिक्षित नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है। यदि एक देश के समस्त बालकों को एक निश्चित आयु

तक निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाती है तो सभी रूप से साक्षर हो जाते है। साक्षर होने के साथ-साथ उनमे धैर्य, सहयोग, उत्तरदायित्व आदि गुणों का विकास होता है इस प्रकार एक बालक बड़ा होकर राज्य एवं समाज का आदर्श नागरिक बनता है।

(7) प्रगति एवं विकास के लिए उपयुक्त वातावरण — विद्यालय बालक की प्रगति एवं विकास के लिए उपयुक्त एवं सन्तुलित वातावरण प्रस्तुत करता है। अज्ञानता, निर्धनता, विकास की कमी, मशीनों की गड़गड़ाहट, भीड़ भाड़, सामाजिक बुराईयों आदि के कारण घर तथा पड़ोस का वातावरण अनैतिक, कोलाहल युक्त, अव्यवस्थित एवं अशुद्ध होता है। इसमें बालकों का शिक्षा प्राप्त करना अनुपयुक्त ही नहीं बल्कि असम्भव भी होता है।

(8) समाज की निरन्तरता बनाए रखने में सहायक — विद्यालय समाज का लघु रूप है इसमें सामाजिक विरासत को सुरक्षित रखा जाता है तथा आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जाता है। विद्यालय में बालकों को वही ज्ञान प्रदान किया जाता है जो व्यक्ति और समाज दोनों की प्रगति एवं विकास मे सहायक हो तथा इसकी निरन्तरता को बनाए रख सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यालय समाज की एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण संस्था है।

(9) विशाल सांस्कृतिक विरासत में सहायक — वर्तमान समय की सांस्कृतिक विरासत बहुत विस्तृत हो गई है इसमे अनेक प्रकार के ज्ञान कुशलताओं और कार्य करने की विधियों का समावेश हो गया है ऐसी विरासत की शिक्षा देने मे व्यक्ति अपने आप को असमर्थ पाते है। अतः उन्होंने यह कार्य विद्यालय को सौंपा है।

SUSHIL

Experiment No. ....

Page No. 1

Date ....

प्रश्न लैंगिक पूर्वाग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

उत्तर - लैंगिक पूर्वाग्रह से हमारा अभिप्राय बालक एवं बालिकाओं में व्याप्त लैंगिक असमानता से है बालक एवं बालिकाओं में उनके लिंग के आधार पर भेद किया जाता है जिसके कारण बालिकाओं को समाज में शिक्षा में एवं पालन-पोषण में बालकों से कम रखा जाता है जिससे वे पिछड़ जाती हैं।

लैंगिक पूर्वाग्रह (विभेद) के कारण -

समाज में लैंगिक पूर्वाग्रह आज से नहीं वरन प्राचीन काल से चला आ रहा है। यह विभेद मात्र भारत में ही नहीं वरन विश्व के तमाम देशों में चल रहा है। इसी प्रकार के विभेद मानवता के लिए खतरा है क्योंकि इन विभेदों के कारण ही मानव में एकता स्थापित करने में समस्या आती है। लैंगिक विभेद के बहुत से कारण है जो निम्नलिखित है —

1. प्राचीन मान्यताएँ
2. पुरुष प्रधान समाज
3. संकीर्ण विचारधारा
4. सांस्कृतिक कुप्रथाएँ
5. मनोवैज्ञानिक कारक
6. जागरूकता का अभाव।

1. प्राचीन मान्यताएँ — अथर्ववेद में यह कहा गया है कि स्त्री को बाल्यावस्था में पिता के, युवावस्था में पति के तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिए। मुस्लिम समाज में भी स्त्रियों को हमेशा पति व पुत्र के अधीन ही रखा गया है। यहाँ तक की किसी रक्त सम्बन्धी वाले पुरुष के बिना उन्हें अपनी धार्मिक यात्रा हज करने का अधिकार भी नहीं है। इस तरह की प्राचीन मान्यताओं के कारण स्त्री को पुरुष से कमतर समझा जाता है।

2. पुरुष प्रधान समाज — भारतीय समाज पुरुष प्रधान है, जहाँ पुत्रों को पिता का उत्तराधिकारी माना जाता है। बच्चों के नाम के आगे पिता का नाम ही लगाया जाता है। वंश परम्परा बढ़ाने के लिए माता-पिता, दादा-दादी आदि को पुत्र की आवश्यकता होती है।

3. संकीर्ण विचारधारा — लोगों की संकीर्ण विचारधारा लड़के तथा लड़की में भेद का एक कारण है। लोगों का मानना है कि लड़के माँ-बाप की वृद्धावस्था का सहारा बनेंगे, वंश को आगे बढ़ाएंगे, उन्हें पढ़ाने-लिखाने से घर की उन्नति होगी जबकि लड़की को पढ़ाने लिखाने में धन एवं समय की बर्बादी होगी। यद्यपि वर्तमान में बालिकाओं ने लोगों की संकीर्ण सोच को तोड़ने का कार्य कर रही है।

SUSHIL

Experiment No. .....

Page No

Date

4. सांस्कृतिक कुप्रथाएँ – प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति पुरुष प्रधान रही है। भारतीय संस्कृति में धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में पुरुष की उपस्थिति अनिवार्य है एवं शुद्ध कार्य तो स्त्रियों के लिए पूर्णतया निषेध्य है। अतः ऐसी स्थिति में पुरुष प्रधान हो जाता है तथा स्त्री का स्थान गौण हो जाता है।

5. मनोवैज्ञानिक कारक –
मनोवैज्ञानिक कारकों को भी लैंगिक विभेद में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रारम्भ में स्त्रियों के मन मस्तिष्क में यह बात बैठ जाती है कि पुरुष महिलाओं से अधिक श्रेष्ठ हैं इसलिए उन्हें पुरुषों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। पुरुषों के बिना स्त्रियों का कोई अस्तित्व नहीं है तथा उनसे ही उनकी पहचान तथा सुरक्षा है।

6. जागरूकता का अभाव – शिक्षा की कमी के कारण आज भी देश के काफी ग्रामीण इलाकों में जागरूकता का अभाव है और ऐसा माना जाता है कि स्त्रियों का क्षेत्र घर व बच्चों की देखभाल तक ही है। इसलिए उन्हें ज्यादा शिक्षा दिलाने की आवश्यकता भी नहीं है इसलिए बालक व बालिकाओं में शिक्षण तथा पालन आदि स्तरों पर भी भेदभाव किया जाता है।

SUSHIL

Experiment No. .....

Page No. 1

Date 15-05-2020

प्रश्न – परिवार के कार्यों का संक्षिप्त वर्णन करो।

उत्तर – परिवार एक ऐसी संस्था है जो प्रत्येक समाज में पाई जाती है। इसलिए इसे सार्वभौमिक संस्था माना गया है।

मैकाइवर के अनुसार "परिवार स्त्री पुरुष की बच्चों सहित या बच्चों रहित अथवा मात्र बच्चों सहित पुरुष की अथवा मात्र बच्चों सहित स्त्री की एक ऐसा समूह है या अधिक स्थायी समिति है।"

कार्य –

1. प्रजनन क्रिया – यह परिवार का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि इसी क्रिया से सन्तान की उत्पत्ति होती है तथा परिवार की नींव पड़ती है। प्रजनन क्रिया प्राणी का जन्मजात गुण है। स्त्री का स्त्रीत्व माता बनने एवं पुरुष का पौरुषत्व पिता बनने में है। माता-पिता बनना प्रजनन क्रिया द्वारा सम्भव है।
2. शिशु पालन – वैसे तो प्रत्येक जीवधारी अपनी सन्तान से अत्यधिक प्रेम करता है परन्तु सभी जीवों की सन्तानें अधिक समय अपने माता-पिता के साथ नहीं रहती। जबकि मनुष्य की सन्तानें माता-पिता के संरक्षण में लम्बे समय तक रहती है।
3. सुरक्षा – परिवार के सभी सदस्यों को सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना परिवार का प्रमुख कार्य है। क्योंकि बेगर सामाजिक सुरक्षा के समाज में

SUSHIL

Experiment No. ....

Date ....

सम्मान प्राप्त नहीं होता तथा बगैर आर्थिक सुरक्षा के समाज में आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती। वर्तमान समय में इसलिए मनुष्य धनी बनना चाहते हैं तथा यह तभी सम्भव है जब परिवार को पूर्ण आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा प्राप्त हो।

(4) स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता – स्वास्थ्य मानव जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है। अतः परिवार के सभी सदस्यों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना नितान्त आवश्यक है। परिवार के बड़े सदस्यों को परिवार के छोटे सदस्यों का छोटे सदस्यों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्य के बगैर जीवन का भरपूर आनन्द नहीं लिया जा सकता। अतः परिवार के सभी सदस्यों को स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल की आवश्यकता है तथा इसी से उनका विकास सम्भव है।

(5) मूल आवश्यकताओं की पूर्ति – मानव की तीन मूल आवश्यकताएँ होती हैं – रोटी, कपड़ा, मकान जिनकी पूर्ति उसे साधनों की सहायता से स्वयं करनी पड़ती है। अतः परिवार का आवश्यक कार्य है।

(6) शिक्षा की व्यवस्था –
प्रायः मनुष्य अपने बच्चों का विकास अपने से भी ज्यादा चाहता है। विकास का आधार शिक्षा है अतः परिवार में पल रहे बालकों के सम्पूर्ण विकास के लिए उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करना परिवार का मूल कार्य है। सभी अवस्थाओं में बालक के पूर्ण विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।